जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

चूरू

Rashtradoot

फोनः- 256906, 256907, फैक्सः- 01562-256908 वर्षः 17 संख्याः 165 प्रभात चूरू, शनिवार 11 अक्टूबर, 2025 पो. रजि. न. चूरू/084/2019-21 पृष्ठ 8 मूल्य 2.50 रु.

बिहार में एक दर्जन कांग्रेस नेता अपने-अपने पुत्र को टिकट दिलाने की फिराक में

कहते हैं कि सीईसी द्वारा तय किये 25 टिकटों में एक भी पुत्र का नाम तय नहीं हुआ है

- कांग्रेस के इन प्रमुख नेताओं में अखिलेश प्रसाद सिंह, मदन मोहन झा, मीरा कुमार, शकील अहमद, अवधेश सिंह व अजीत शर्मा शामिल हैं।
- चर्चा है कि इन वरिष्ठ नेताओं में से अधिकतर सिंगल नाम का पैनल भिजवाने में सफल हो गये थे, पर, स्क्रीनिंग कमेटी के चेयरमैन अजय माकन ने यह सुनिश्चित किया कि हर सीट पर एक से अधिक नाम का पैनल सीईसी को जाये।

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 अक्टूबर। बिहार में कांग्रेस नेताओं की स्थिति चाहे जैसी भी हो, चाहे उनका खुद का जनाधार हो या वे अपने बड़े गठबंधन सहयोगी के सहारे हों, लेकिन उनका हार न मानने वाला रवैया कायम है।

बिहार के करीब आधा दर्जन कांग्रेस नेता इस समय अपने बेटे-बेटियों को टिकट दिलाने के लिए जोरदार कोशिशें कर रहे हैं, ताकि उन्हें आने वाले विधानसभा चुनावों में उतारा जा सके और राजनीति में स्थापित किया जा सके।

कल कांग्रेस और राजद के बीच गठबंधन की औपचारिक घोषणा होगी, जिसमें कांग्रेस तेजस्वी यादव को महागठबंधन के मुख्यमंत्री पद के चेहरे के रुप में समर्थन देगी।

कांग्रेस लगभग 58 सीटों पर चुनाव लड़ने की तैयारी में है, जिनमें से 25 सीटों पर उम्मीदवारों के नाम पार्टी की केन्द्रीय चुनाव समिति (सीईसी) ने कल ही तय कर दिये थे। इनमें ज्यादातर वर्तमान विधायक हैं, जिन्हें दोबारा मौका दिया गया है।

अपने बच्चों को टिकट दिलाने की कोशिश में जुटे कांग्रेस नेताओं को उम्मीद थी कि सीईसी उनके नामों को मंजूरी दे देगी, क्योंकि कई सीटों के लिए केवल एक ही नाम पैनल में भेजा गया था। लेकिन स्क्रीनिंग कमेटी के अध्यक्ष अजय माकन ने यह सुनिश्चित किया कि हर सीट के लिए एक से अधिक नाम भेजे जाएं।

अब तक किसी भी नेता के बेटे या बेटी के नाम को मंजूरी नहीं मिली है।

इन नेताओं में प्रमुख हैं, अखिलेश प्रसाद सिंह, जो पूरी तरह इस कोशिश में लगे हैं कि उनका बेटा या तो विधायक बने या सांसद। वे तब तक चैन से नहीं बैठेंगे, जब तक उनका यह मकसद पूरा नहीं हो जाता। मदन मोहन झा, जो राज्य कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष और विधान परिषद में कांग्रेस के नेता हैं, अब अपने बेटे को चुनाव में उतारना चाहते हैं।

पार्टी की वरिष्ठ नेता और पूर्व लोकसभा अध्यक्ष, मीरा कुमार अपने बेटे को फिर से चुनाव मैदान में उतारना चाहती हैं, हालांकि वे पिछला लोकसभा चुनाव हार गये थे।

शकील अहमद, जो पूर्व केन्द्रीय मंत्री और राज्य कांग्रेस के अध्यक्ष रह चुके हैं, लगभग राजनीति से दूर हो चुके थे, लेकिन अब वे अपने बेटे को टिकट दिलाना चाहते हैं। कुछ महीने पहले उन्होंने बेटे को विदेश से बुला लिया और तब से वह अपने चुनाव क्षेत्र में सक्रिय है।

छह बार के विधायक और बहुत वरिष्ठ नेता अवधेश सिंह भी अपने बेटे को टिकट दिलाना चाहते हैं।

अजीत शर्मा चाहते हैं कि उनकी अभिनेत्री बेटी नेहा शर्मा को टिकट दिया जाए।

अपने बच्चों को टिकट दिलाने के इच्छुक इन सभी नेताओं ने बैठक में एक-दूसरे का समर्थन किया, लेकिन पैनल बनने के बाद भी, अधिकतर नेता अभी तक कड़ी लॉबिंग में जुटे हैं, ताकि अपने बेटों या बेटियों के लिए टिकट सुनिश्चित करा सकें।

हालांकि आज स्क्रीनिंग कमेटी की एक और बैठक हुई, लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि केन्द्रीय चुनाव समिति की कोई और बैठक बुलाई जाएगी या नहीं।

अमेरिका पाकिस्तान को नई उन्नत मिसाइलें नहीं देगा

नयी दिल्ली, 10 अक्टूबर। अमेरिका ने पाकिस्तान को मध्यम दूरी की हवा से हवा में मार करने वाली नई उन्नत मिसाइलों की आपूर्ति से संबंधित मीडिया रिपोर्टों का खंडन करते हुए कहा है कि उसकी पाकिस्तान को ये मिसाइलें देने की कोई योजना नहीं है। भारत में अमेरिकी दूतावास ने शुक्रवार को एक स्पष्टीकरण जारी करते हुए कहा कि मीडिया रिपोर्टों में 30 सितम्बर के जिस बिक्री अनुबंध का उल्लेख किया गया है, वह रखरखाव और पुर्जों के लिए है

- अमेरिकी दूतावास ने स्पष्टीकरण दिया कि पाकिस्तान से बिक्री अनुबंध रखरखाव व पुर्जों के लिये है।

और इसमें पाकिस्तान को इन मिसाइलों की आपूर्ति करने का जिक्र कहीं नहीं है।

दूतावास ने स्पष्टीकरण में कहा है, "30 सितंबर 2025 को युद्ध विभाग ने मानक अनुबंध घोषणाओं की एक सूची जारी की, जिसमें पाकिस्तान सहित कई देशों के लिए रखरखाव और पुर्जों के लिए मौजूदा विदेशी सैन्य बिक्री अनुबंध में संशोधन का उल्लेख था। प्रशासन इस बात पर ज़ोर देना चाहता है कि झूठी मीडिया रिपोर्टों के विपरीत, इस अनुबंध संशोधन का कोई भी हिस्सा पाकिस्तान को नई उन्नत मध्यम दूरी की हवा से हवा में मार करने वाली मिसाइलों (एएमआरएएएम) की आपूर्ति के लिए नहीं है। इसमें पाकिस्तान की किसी भी मौजूदा क्षमता का उन्नयन शामिल नहीं है।"

ट्रंप का पत्ता कटा, मारिया कोरीना मचाडो को नोबेल शांति पुरस्कार

वाइट हाउस प्रवक्ता ने कहा कि ट्रंप शांति समझौते कराने, युद्ध रुकवाने व जीवन बचाने का काम करते रहेंगे

- वेनेज़ुएला की "आयरन लेडी" के नाम से प्रसिद्ध, मचाडो का चयन, प्रजातंत्र का साहसिक बचाव करने, स्वतंत्र चुनाव की मांग पर अडिग रहने तथा मानवाधिकारों के उल्लंघनों को उजागर करने के लिये किया गया।
- पर्यवेक्षकों का मानना है कि नोबेल पुरस्कार समिति पर ट्रंप को चुनने के लिए भयंकर दबाव था, पर समिति ने मचाडो के नाम को तरजीह दी, क्योंकि पूरे विश्व में प्रजातंत्र खतरे में है तथा इस चयन से प्रजातंत्र के लिए संघर्ष करने वालों की हिम्मत बढ़ेगी।

-डॉ. सतीश मिश्रा---
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 10 अक्टूबर। वेनेज़ुएला की विपक्षी नेता मारिया कोरीना मचाडो को अधिनायकवाद के खिलाफ उनके अडिग संघर्ष और लोकतंत्र की साहसिक रक्षा के लिए वर्ष 2025 के नोबेल शांति पुरस्कार के लिए चुनकर, ऐसा लगता है कि नोबेल समिति ने अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप को निराश कर दिया है, जो इस प्रतिष्ठित सम्मान को पाने के लिए बेहद उत्सुक, बल्कि लालायित थे।

घोषणा के बाद, वाइट हाउस ने तीखी प्रतिक्रिया देते हुये कहा, "एक बार फिर नोबेल समिति ने साबित कर दिया कि वह शांति से ज्यादा राजनीति को महत्व देती है।" वाइट हाउस के प्रवक्ता स्टीवन चंग ने शुक्रवार शाम को कहा, "(लेकिन) राष्ट्रपति ट्रंप शांति समझौते करते रहेंगे, युद्ध खत्म कराते करेंगे और लोगों की जान बचाते रहेंगे। उनका दिल मानवतावादी है और उनकी जैसी इच्छाशक्ति से पहाड़ हिलाने वाला कोई दूसरा व्यक्ति नहीं है।"

ट्रंप, जिन्होंने खुद को नोबेल शांति पुरस्कार का हकदार बताया था और इसके लिए लगभग जुनून भरा अभियान चलाया था, जिसमें उन्होंने कुछ मामलों में झूठे दावे भी किए थे कि उन्होंने युद्ध रोके हैं, ने अभी तक कोई टिप्पणी नहीं की है, लेकिन जल्द ही उनके गुस्से भरे बयान की संभावना जताई जा रही है।

वेनेज़ुएला की आयरन लेडी कही जाने वाली माचाडो पिछले 14 महीनों से छिपकर रह रही हैं, क्योंकि उन्होंने राष्ट्रपति निकोलस मादुरो के पक्ष में घोषित एक विवादास्पद चुनाव परिणाम को अस्वीकार कर दिया था।

सरकारी धमकियों, अयोग्यता और दमन के बावजूद, माचाडो लगातार स्वतंत्र चुनावों की मांग करती रही हैं और मानवाधिकार के उल्लंघनों को उजागर करती रही हैं। उन्हें यह सम्मान ऐसे समय में मिला है, जब वेनेज़ुएला में राजनीतिक स्वतंत्रता बुरी तरह प्रतिबंधित है।

समिति ने इस वर्ष वेनेज़ुएला पर ध्यान केन्द्रित करना बेहतर समझा, जबकि अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप बार-बार सार्वजनिक रूप से यह कहते रहे कि वे इस पुरस्कार के योग्य हैं।

घोषणा से पहले, पुरस्कार विशेषज्ञों ने कहा था कि ट्रंप को यह पुरस्कार नहीं मिलेगा, क्योंकि वे उस अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को तोड़ रहे हैं, जिसे नोबेल समिति हमेशा से महत्व

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)